इकाई – 2
"a"

अर्थशास्त्र पाठ्यचर्या – अवधारणा →

अर्थशास्त्र पाठ्यचर्या की अवधारणा निम्नांकित रूप से व्यक्त किया गया है।

प्राचार्य
... महाविद्यालय
शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान

पाठ्यचर्या का अर्थ →

'करीकुलम' (Curriculum) शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के शब्द 'क्युरेरे' (Currere) से हुई है, जिसका अर्थ है – 'Race course' (दौड़ का मैदान)। इस प्रकार, पाठ्यचर्या में स्पर्धा एवं लक्ष्य-सिद्धि के भाव निहित हैं। इस प्रकार पाठ्यचर्या वह दौड़ का मैदान है, जिस पर बालक लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए दौड़ता है। इसके अर्थ को और अधिक स्पष्ट करने के लिए हम आगे कुछ परिभाषाएँ दे रहे हैं –

(1) कनिंघम → "पाठ्यचर्या कलाकार (शिक्षक) के हाथ में एक यन्त्र है जिससे वह अपनी सामग्री (शिष्य) को अपने आदर्श (लक्ष्य) के अनुसार अपने कलागृह (विद्यालय) में ढालता है।"

(2) को व को → "पाठ्यचर्या में सीखने वाले या बालक के वे सभी अनुभव निहित हैं जिन्हें वह विद्यालय या उसके बाहर प्राप्त करता है। ये समस्त अनुभव एक कार्यक्रम में निहित किये जाते हैं, जो उसके मानसिक, शारीरिक, संवेगात्मक, सामाजिक, आध्यात्मिक एवं नैतिक रूप से विकसित होने में सहायता

देता है।"

③ वाल्टर → "पाठ्यचर्या में वे समस्त अनुभव सम्मिलित हैं जिनको बालक विद्यालय के निर्देशन में प्राप्त करते हैं, इसके अन्तर्गत कक्षा - कक्ष की क्रियाएँ तथा उनके बाहर के समस्त कार्य स्वयं खेल सम्मिलित है।"

④ शिक्षा आयोग → "विद्यालय के पर्यवेक्षण में अनेक प्रकार के कार्यकलापों से छात्रों को विभिन्न अध्ययन - अनुभव प्राप्त होते हैं, हम विद्यालय पाठ्यचर्या को इन अध्ययन - अनुभवों की समष्टि समझते है।"

पाठ्यचर्या के आधार →

पाठ्यचर्या के आधारों को विद्यालयों द्वारा अपने छात्रों के लिए प्रस्तुत अधिगमानुभवों की प्रकृति, प्रकार, मात्रा तथा गुणवत्तात्मकता को प्रभावित करने वाले मूल्यों, परम्पराओं तथा शक्तियों (Fo के रूप में स्पष्ट किया जा सकता है। पाठ्यचर्या के आयोजक को अपने समाज की प्रकृति उसके स्थायी मूल्यों, उसके परिवर्तनों के क्षेत्र व्यक्ति की प्रकृति तथा सामाजिक विरासत को ध्यान में रखना आवश्यक है। इस प्रकार समाज, व्यक्ति तथा सामाजिक विरासत ऐसे आधार हैं जिनके आधार पर विभिन्न आधारों

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान

(1) दार्शनिक आधार (Philosophical Base),
(2) मनोवैज्ञानिक आधार (Psychological Base),
(3) सांस्कृतिक आधार (Cultural Base)

मध्य अर्थशास्त्र में पाठ्यचर्या निर्माण के सिद्धान्त →

अर्थशास्त्र में पाठ्यचर्या निर्माण के सिद्धान्त निम्नांकित है।

(1) जीवन से सम्बन्धित होने का सिद्धान्त →

पाठ्यचर्या में जिन विषयों को स्थान दिया जाये, उनका वास्तविक जीवन से सम्बन्ध होना चाहिए। ऐसे विषयों का अध्ययन करके ही बालक जीवन में प्रवेश करने के बाद सफलता प्राप्त कर सकेंगे। पुराने ढंग की पाठशालाओं और मकतबों का इसीलिए लोप हो गया, क्योंकि उनमें जो विषय पढ़ाये जाते थे, उनका जीवन से कोई सम्बन्ध नहीं था।

(2) उपयोगिता का सिद्धान्त → पाठ्यचर्या निर्माण का एक महत्वपूर्ण सिद्धान्त यह है कि, उसमें जिन विषयों को स्थान दिया जाये, वे बालक के भावी जीवन के लिए उपयोगी होनी चाहिए। इस सम्बन्ध में नन (Nunn) ने लिखा है, "साधारण मनुष्य सामान्यतः यह चाहता है कि उसके बच्चे केवल ज्ञान के प्रदर्शन के लिए कुछ व्यर्थ की बाते सीखें, परन्तु समग्र रूप में वह यह चाहता है कि उनको वे बातें

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, इटावा

लिए उपयोगी हो।"

(3) विकास की सतत प्रक्रिया का सिद्धान्त -
किसी भी पाठ्यचर्या का सदैव के लिए निर्माण नहीं किया जा सकता है। उसमें समय के साथ परिवर्तन किये जाने आवश्यक हैं। क्रो व क्रो (Crow and Crow) का कथन है, "वैज्ञानिक प्रगति, नवीन व्यावसायिक अवसर, शक्तों के अधिक विस्तृत अन्तर्सम्बन्ध, प्रगतिशील आदर्श और आकांक्षाएँ यह मांग प्रस्तुत करती हैं कि शिक्षा के सिद्धान्त और व्यवहार का ज्ञान, कुशलता और दृष्टिकोण पर दिये जाने वाले विभिन्न प्रकार के बलों के अनुकूल बनाया जाये।"

(4) समय की उपलब्धता → पाठ्यक्रम के निर्माण मे स्तर विशेष पर उस विषय के लिए उस समय उपलब्ध है, को ध्यान में रखना आवश्यक है। अतः पाठ्यवस्तु व पाठ्यक्रियाएँ निर्धारित करते समय समय की उपलब्धता को ध्यान मे रखा जाये। समय की उपलब्धता का अभिप्राय है - स्तर विशेष पर अर्थात कक्षा 9 व 10 या कक्षा 11 व 12 में अर्थशास्त्र को दोनो सत्रों में कितना समय या कितने घंटे उपलब्ध है।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

विभिन्न शैक्षिक स्तरों पर कार्यान्वित वर्तमान अर्थशास्त्र पाठ्यचर्या का आलोचनात्मक विश्लेषण

(1) अर्थशास्त्र की विषयवस्तु का प्रस्तुतीकरण करते समय शिक्षक को सदैव बालकों की मानसिक योग्यता का ध्यान रखना चाहिए। वह जो भी विषयवस्तु प्रस्तुत करे, वह उनकी आयु, मानसिक स्तर, विकास की अवस्थाओं एवं आवश्यकताओं तथा उनकी सामर्थ्य एवं रुचियों के अनुकूल होनी चाहिए। इन बातों के ध्यान से वह सफलतापूर्वक प्रस्तुतीकरण कर सकेगा।

(2) इस शास्त्र की पाठ्य-वस्तु का चयन समाज की आवश्यकताओं के अनुकूल होना चाहिए। इस तथ्य को इसके प्रस्तुतीकरण करते समय भी ध्यान में रखना चाहिए। दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि अर्थशास्त्र की विषय-वस्तु का प्रस्तुतीकरण सामाजिक परिस्थितियों एवं आवश्यकताओं के अनुकूल करना चाहिए जिससे वे समाज की आर्थिक समस्याओं के भावी स्वरूप का चिंतन करने तथा उनकी प्राप्ति में सक्रिय भाग ले सकें।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

(3) अर्थशास्त्र की विषयवस्तु का प्रस्तुतीकरण करते समय समन्वय के सिद्धान्त का भी ध्यान रखना चाहिए क्योंकि इस शास्त्र का ज्ञान अन्य शास्त्रों के साथ समन्वय स्थापित किए बिना अहितकर सिद्ध होगा। अतः इसका आर्थिक जीवन की ठोस परिस्थितियों एवं अन्य विषयों से सम्बन्ध स्थापित करते हुए प्रस्तुतीकरण करना चाहिए। दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि अर्थशास्त्र की विषय वस्तु का समन्वित प्रस्तुतीकरण किया जाना चाहिए।

(4) इस शास्त्र की विषय वस्तु के प्रस्तुतीकरण में इस बात का ध्यान रखना आवश्यक है कि शिक्षक जिस नियम एवं सिद्धान्त को छात्रों के समक्ष प्रस्तुत करे, वह उन नियमों एवं सिद्धान्तों की व्यावहारिकता पर अवश्य बल दे। यह एक व्यावहारिक विज्ञान है।

अर्थशास्त्र की पाठ्यवस्तु का विभिन्न स्तरों पर प्रस्तुतीकरण →

'माध्यमिक शिक्षा - आयोग' द्वारा शिक्षा के विभिन्न स्तरों का निम्नलिखित ढाँचा प्रस्तुत किया गया है —

(i) प्राइमरी स्तर (6-11) → इस स्तर पर 5 कक्षाएँ रखी हैं।

(ii) जूनियर हाई स्कूल स्तर या पूर्व माध्यमिक स्तर (11+14) → इस स्तर पर तीन कक्षाएँ 6, 7 तथा 8 हैं।

(iii) उच्चतर माध्यमिक स्तर - (14+-17) → इस स्तर पर तीन कक्षाएँ - 9, 10 तथा 11 वीं है।

(iv) विश्वविद्यालय स्तरीय शिक्षा → इसमें प्रथम डिग्री कोर्स, मास्टर डिग्री कोर्स, अनुसन्धान कार्य आदि आते हैं।

परन्तु हमारे प्रदेश में भी अभी प्राचीन ढाँचा प्रचलित है, जो कि इस प्रकार है —

प्राचार्य

(i) प्राइमरी स्तर → इस स्तर पर 5 कक्षाएँ
(ii) जूनियर हाईस्कूल स्तर → कक्षा 6, 7 तथा 8
(iii) माध्यमिक स्तर → कक्षा 9 तथा 10
(iv) उच्चतर माध्यमिक स्तर या इण्टरमीडियट स्तर – कक्षा 11 तथा 12
(v) ~~विश्वविद्यालय स्तरीय शिक्षा~~ –
विश्वविद्यालय स्तरीय शिक्षा → प्रथम डिग्री कोर्स, मास्टर डिग्री कोर्स आदि।

परन्तु इस शास्त्र का शिक्षण कक्षा 9 से प्रारम्भ होकर विश्वविद्यालय स्तरीय शिक्षा तक रहता है। 'सामाजिक अध्ययन' नामक विषय में इस शास्त्र के कुछ तत्व सम्मिलित होते हैं। परन्तु हमारे देश में 'सामाजिक अध्ययन' का अर्थ – इतिहास, वाणिज्य तथा नागरिकशास्त्र के मिश्रित कोर्स से लगाया गया है। परन्तु इसके अन्तर्गत अर्थशास्त्र के आधारभूत तत्वों का भी समावेश होना चाहिए, जिससे मानवीय सम्बन्धों को समझा जा सके तथा इसके समावेश का एक लाभ यह भी होगा कि इसके द्वारा कक्षा 9 में प्रारम्भ होने वाले 'अर्थशास्त्र' विषय के शिक्षण के लिए पृष्ठभूमि भी तैयार हो जायेगी। अतः इसका समावेश अवश्य हो।

जूनियर स्तर पर अर्थशास्त्र का प्रस्तुतीकरण →

इस स्तर पर जो प्रस्तुतीकरण होगा वह बालकों के विकास की अवस्था की अवश्यकताओं के अनुकूल होगा। इस स्तर का छात्र किशोरावस्था के निकट पहुँचने लगता है। इस स्तर का बालक वास्तविकता में आस्था रखता है तथा उसका मानसिक विकास भी पर्याप्त मात्रा में हो जाता है। इन सब बातों को ध्यान में

प्राचार्य
गिरि मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पण्डेयपुर, वाराणसी

रखकर इस स्तर पर प्रस्तुतीकरण किया जाना चाहिए। इस स्तर के प्रस्तुतीकरण के उद्देश्य निम्नलिखित होने चाहिए —

(1) अर्थशास्त्र की विषयवस्तु का सूचनात्मक ज्ञान प्रदान करना।
(2) स्थानीय आर्थिक जीवन की विशेषताओं से अवगत करना।
(3) प्रादेशिक एवं राष्ट्रीय आर्थिक समस्याओं का साधारण ज्ञान प्रदान करना।

जूनियर स्तर की विषयवस्तु → इसकी विषयवस्तु का 'सामाजिक अध्ययन' नामक विषय के अन्तर्गत समावेश होगा। इसमें निम्नलिखित बातों का समावेश होना चाहिए —

(1) अर्थशास्त्र का साधारण भाषा में अर्थ तथा महत्व।
(2) डाक-व्यवस्था का ज्ञान
(3) आवागमन के साधनों की जानकारी
(4) घरेलू उद्योग-धन्धे
(5) राष्ट्रीय आर्थिक समस्याओं का सामान्य ज्ञान।

इस स्तर पर इस शास्त्र की पृथक पुस्तकें नहीं होंगी वरन् सामाजिक अध्ययन की पुस्तक में इसका विवेचन किया जायेगा।

शिक्षण-पद्धतियाँ, शिक्षण-रीतियाँ तथा सहायक सामग्री →

इस स्तर पर अग्रांकित शिक्षण-पद्धतियों, रीतियों तथा सहायक

शिक्षण पद्धतियाँ —

(i) योजना – पद्धति
(ii) पाठ्य-पुस्तक पद्धति
(iii) प्रयोगशाला पद्धति

शिक्षण – रीतियाँ तथा सहायक सामग्री →

(i) चित्र
(ii) मानचित्र
(iii) चार्ट
(iv) रेडियो
(v) चलचित्र
(vi) नाटकीय रीति
(vii) प्रश्न रीति
(viii) कथन रीति
(ix) परीक्षा रीति
(x) कहानी – कथन रीति
(xi) पर्यटन

मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
...पुर, ताखा, बलिया

माध्यमिक स्तर पर अर्थशास्त्र का प्रस्तुतीकरण-

इस स्तर के बालक की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं जिनको ध्यान में रखकर विषय वस्तु का प्रस्तुतीकरण करना चाहिए —

(I) मानसिक स्तर में परिपक्वता आ जाती है।
(II) शब्द-ज्ञान भी विस्तृत हो जाता है।

माध्यमिक स्तर पर प्रस्तुतीकरण के उद्देश्य —

(I) आर्थिक – जीवन के विकास से अवगत कराना।
(II) वैज्ञानिक एवं उदार दृष्टिकोण विकसित करना।
(III) कुशल उपभोक्ता बनाना।
आर्थिक नागरिकता का विकास करना।

माध्यमिक स्तर की विषय वस्तु —

(प्रथम भाग)

1. अर्थशास्त्र
2. अर्थशास्त्र के महत्वपूर्ण पदों की परिभाषा
3. उत्पत्ति के साधन
4. अदल — बदल
5. आवश्यकताएँ
6. पारिवारिक बजट
7. घरेलू उद्योग — धन्धे
8. श्रम तथा श्रमिकों की समस्याएँ
9. ग्रामीण समस्याएँ
10. कृषि की आयु का वितरण
11. सहकारी आन्दोलन
12. ग्राम तथा जिले का शासन
13. मजदूरी
14. व्यावहारिक कार्य —

(द्वितीय भाग)

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

1. आर्थिक सुयोग
2. मनुष्य तथा उसका पर्यावरण
3. भारत की प्राकृतिक दशा
4. सिंचाई के साधन एवं उनकी आवश्यकता
5. भारत की प्रमुख फसलें
6. भारत की पशु — सम्पत्ति
7. वन सम्पत्ति
8. भारत के खनिज पदार्थ
9. शक्ति के साधन
10. उद्योगों का स्थानीयकरण
11. जनसंख्या का वितरण
12. यातायात एवं सन्देशवाहन के साधन
13. भारतीय व्यापार
14. भारतीय प्रसिद्ध नगर बन्दरगाह तथा हवाई अ

शिक्षण – पद्धति → इस स्तर पर निम्न-लिखित शिक्षण – पद्धतियों का उपयोग किया जा सकता है –

1. योजना – पद्धति
2. विश्लेषण – संश्लेषण पद्धति
3. समस्या पद्धति
4. प्रयोगशाला पद्धति
5. निरीक्षण अध्ययन पद्धति
6. पाठ्य – पुस्तक पद्धति
7. समाजीकृत अभिव्यक्ति पद्धति
8. आगमन – निगमन पद्धति

शिक्षण – रीतियाँ एवं सहायक सामग्री →

इस स्तर पर निम्नलिखित रीतियों एवं साधनों का उपयोग किया जा सकता है –

शिक्षण – रीतियाँ –

1. प्रश्न रीति
2. कथन रीति
3. उदाहरण रीति
4. परीक्षा रीति
5. कार्य – निर्धारण रीति
6. अभ्यास रीति
7. कहानी – कथन रीति
8. निरीक्षण रीति
9. नाटकीय रीति

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, तारवा, बलिया

सहायक सामग्री

1. चित्र
2. रेखाचित्र तथा रेखाकृतियाँ

(4) ग्राफ तथा तालिकाएँ
(5) पत्र एवं पत्रिकाएँ
(6) चलचित्र
(7) रेडियो
(8) समाचार सम्बन्धी फिल्म
(9) मॉडल
(10) चार्ट
(11) टेपरिकार्डर एवं ग्रामोफोन
(12) पर्यटन

इण्टरमीडिएट स्तर पर अर्थशास्त्र का प्रस्तुतीकरण —

इस स्तर के छात्रों की निम्नलिखित विशेषताओं को ध्यान में रखकर प्रस्तुतीकरण किया जाना चाहिए —

(I) मानसिक परिपक्व होता है।
(II) संवेगात्मक रूप से विकसित होना।
(III) आर्थिक समस्याओं एवं विषमताओं में सक्रिय भाग लेने की तीव्र इच्छा का होना।

उद्देश्य → इस स्तर के शिक्षण के निम्नांकित उद्देश्य होने चाहिए

(I) आर्थिक दृष्टिकोण व्यापक बनाना।
(II) कुशल उत्पादक एवं उपभोक्ता बनाना।
(III) आलोचनात्मक एवं तार्किक दृष्टिकोण उत्पन्न करना
(IV) आर्थिक जागरिकता का विकास करना
(V) अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं से अवगत कराकर अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना का विकास करना।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण

इण्टरमीडिएट स्तर की विषयवस्तु —

(प्रथम भाग)

1. विषय - परिचय
2. उपभोग
3. उत्पत्ति
   - (I) भूमि
   - (II) श्रम
   - (III) पूंजी
   - (IV) प्रबन्ध एवं साहस
4. कर

(द्वितीय भाग)

1. विनिमय
2. वितरण
3. व्यावहारिक कार्य

शिक्षण - रीतियाँ, शिक्षण - पद्धतियाँ तथा साधन —

इस स्तर पर निम्नांकित रीतियों, पद्धतियों तथा साधनों का उपयोग किया जा सकता है —

शिक्षण - रीतियाँ

I. व्याख्यान पद्धति
II. समस्या - पद्धति
III. आगमन - निगमन पद्धति
IV. विश्लेषण - संश्लेषण पद्धति

शिक्षण - पद्धतियाँ

I. प्रश्न रीति
II. उदाहरण रीति
III. परीक्षा रीति
IV. विश्लेषण - संश्लेषण पद्धति

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

साधन
(I) मानचित्र
(II) रेखाचित्र तथा रेखाकृतियाँ
(III) ग्राफ एवं चार्ट
(IV) चलचित्र एवं समाचार सम्बन्धी फिल्म
(V) पत्र - पत्रिकाएँ
(VI) सारणी एवं तालिकाएँ तथा
(VII) पर्यटन

अर्थशास्त्र का अन्य विषयों के साथ सह - सम्बन्ध —

अर्थशास्त्र का अन्य विषयों के साथ सह - सम्बन्ध निम्नांकित है।

(I) अर्थशास्त्र और समाजशास्त्र → समाजशास्त्र में मनुष्य के सामाजिक जीवन के सभी पहलुओं (जैसे धर्म सम्बन्धी, राज्य सम्बन्धी, नीति सम्बन्धी आदि) का अध्ययन किया जाता है तथा अर्थशास्त्र में मनुष्य के केवल एक पहलू (आर्थिक क्रियाओं) का अध्ययन किया जाता है। इस तरह अर्थशास्त्र समाजशास्त्र का एक अंग है। इन दोनों में पिता (समाजशास्त्र) पुत्र (अर्थशास्त्र) का सम्बन्ध माना जाता है।

(अ) समाजशास्त्र के अध्ययन में अर्थशास्त्र का ज्ञान अति आवश्यक है →

मनुष्य की आर्थिक क्रियाएँ उनकी अन्य सामाजिक क्रियाओं को अधिक प्रभावित करती हैं। अतः मनुष्य की आर्थिक क्रियाओं का अध्ययन किये बिना हम सामाजिक क्रियाओं को भली प्रकार

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

नहीं समझ सकते। इसके अतिरिक्त समाजशास्त्र के व्यापक नियमों पर आधारित हैं। इस प्रकार वर्तमान अध्ययन के बिना समाजशास्त्र का अध्ययन अधूरा है।

(ब) अर्थशास्त्र के अध्ययन हेतु समाजशास्त्र का ज्ञान आवश्यक

समाजशास्त्र के अध्ययन से हमें अन्य शास्त्रों के सामान्य नियमों का ज्ञान प्राप्त होता है जिसके फलस्वरूप अर्थशास्त्र पर अन्य शास्त्रों के प्रभावों का अध्ययन किया जा सकता है।

(2) अर्थशास्त्र एवं गणित → अर्थशास्त्र तथा गणित में गहरा सम्बन्ध है। वर्तमान समय में अर्थशास्त्र में गणित का प्रयोग बड़े पैमाने पर किया जा रहा है। अर्थशास्त्र के सिद्धान्त सिद्धान्तों एवं समस्याओं का रेखाचित्र, वक्रों तथा सूत्रों द्वारा समझाने का प्रयास किया जाता है। अर्थमिति (Econometrics) के ज्ञान के बिना आधुनिक आर्थिक समस्याओं एवं सिद्धान्तों को समझना कठिन हो गया है। इस प्रकार अर्थशास्त्र के विकास में गणितशास्त्र का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

07/09/2020